PK टाइम्स
दैनिक लोक टुडे
जनता की आवाज...
विश्वसनीय खबरों का सर्वश्रेष्ठ अखबार
pktimesnews.com
loktodaynews.com
PK Times News
thepktimesofficial
pk_timesofficial
वर्ष: 12 अंक: 331 | मूल्य: 1.00 रुपए | पृष्ठ: 4 | मंगलवार 16 जून 2026 | RNI No. RAJHIN/2013/50649

पचपदरा रिफाइनरी और जोधपुर एयरपोर्ट का एक साथ जुलाई में पीएम मोदी करेंगे उद्घाटन

जोधपुर में प्रेस कांफ्रेस के दौरान केंद्रीय मंत्री गजेंद्रसिंह शेखावत ने भी दिए संकेत

सालाना 9 मिलियन टन रिफाइनिंग क्षमता वाले इस ड्रीम प्रोजेक्ट के साथ मारवाड़ को मिलेगी दोहरी सौगात

मनोहरसिंह खोखर। जयपुर

राजस्थान के मारवाड़ अंचल के आर्थिक और बुनियादी ढांचे को बदलने वाले दो सबसे बड़े प्रोजेक्ट्स को लेकर बेहद अहम खबर सामने आई है। केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने स्पष्ट संकेत दिए हैं कि बालोतरा (पचपदरा) स्थित प्रदेश की पहली रिफाइनरी-सह-पेट्रोकेमिकल कॉम्प्लेक्स (HRRL) और जोधपुर एयरपोर्ट के नए टर्मिनल का उद्घाटन एक साथ किया जाएगा। केंद्रीय मंत्री ने साफ किया कि इन दोनों ही बड़ी परियोजनाओं का भव्य लोकार्पण देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया जाएगा। शेखावत ने बताया कि वर्तमान में दोनों ही प्रोजेक्ट्स के काम अपने अंतिम चरण में हैं। जैसे ही जोधपुर एयरपोर्ट का नया टर्मिनल अपनी सभी तकनीकी और आधिकारिक औपचारिकताओं को पूरा कर लेगा, उसके तुरंत बाद उद्घाटन का अंतिम कार्यक्रम और तिथि तय कर दी जाएगी। सूत्रों के अनुसार इन दोनों मेगा प्रोजेक्ट्स का यह संयुक्त महा-लोकार्पण आगामी जुलाई महीने के दूसरे या तीसरे सप्ताह में होना संभावित है, जिसे लेकर दिल्ली से लेकर जयपुर तक प्रशासनिक तैयारियां तेज हो गई हैं। पुलिस और प्रशासनिक सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार रिफाइनरी और एयरपोर्ट के संयुक्त उद्घाटन समारोह को लेकर सुरक्षा और कानून व्यवस्था की तैयारियां पहले से ही की जा रही हैं।

युद्धस्तर पर चल रही हैं तैयारियां

वीवीआईपी दौरे की सुगबुगाहट के बीच पेट्रोलियम मंत्रालय, नागरिक उड्डयन विभाग और राज्य प्रशासन के आला अधिकारी रोजाना दोनों प्रोजेक्ट्स की प्रगति की मॉनिटरिंग कर रहे हैं। सुरक्षा व्यवस्थाओं और हेलीपैड निर्माण को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

भारी पुलिस बल की तैनाती :

जब भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का रिफाइनरी और वीआईपी क्षेत्र का दौरा तय होता है, सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पचपदरा और संबंधित उद्घाटन स्थलों पर करीब 5000 से अधिक पुलिसकर्मियों और सुरक्षा बलों की तैनाती का खाका तैयार रहता है।

हाई-लेवल सुरक्षा घेरा

जोधपुर एयरपोर्ट और रिफाइनरी दोनों ही संवेदनशील और महत्वपूर्ण स्थान हैं। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, केंद्रीय खुफिया एजेंसियों और राजस्थान पुलिस की विशेष शाखाएं मिलकर उद्घाटन से पहले सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेंगी।

ट्रैफिक और रूट डायवर्जन

जोधपुर शहर और बालोतरा हाईवे (NH 62 और रिफाइनरी मार्ग) पर सुचारू यातायात के लिए पुलिस द्वारा विशेष ट्रैफिक रूट और वीआईपी कॉरिडोर की योजना बनाई जा रही है ताकि आम जनता को असुविधा न हो।

तकनीकी कारणों से देरी और नए निर्देश -

पुलिस और प्रशासनिक सूत्रों के अनुसार इससे पहले रिफाइनरी में एक तकनीकी फॉल्ट/हाइड्रोकार्बन रिसाव की वजह से सुरक्षा कारणों के चलते कार्यक्रमों में बदलाव किया गया था। यही कारण है कि केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने स्पष्ट किया है कि जब तक जोधपुर एयरपोर्ट का नया टर्मिनल पूरी तरह से एनओसी और तकनीकी सुरक्षा क्लीयरेंस हासिल नहीं कर लेता, तब तक उद्घाटन की अंतिम तारीख को पुलिस और प्रशासन की अंतिम सुरक्षा रिपोर्ट के बाद ही अंतिम रूप दिया जाएगा।

79,459 करोड़ की लागत और 9 MMTPA की महा-क्षमता

हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (HPCL) और राजस्थान सरकार की 74:26 की भागीदारी वाली यह रिफाइनरी देश का पहला ऐसा एकीकृत प्रोजेक्ट है, जो पूरी तरह से एडवांस BS-VI मानकों वाले ग्रीन फ्यूल का उत्पादन करेगा। अत्याधुनिक तकनीकों को जोड़ने के कारण इसकी संशोधित लागत 79,459 करोड़ तक पहुंच गई है। यह प्लांट हर साल 9 मिलियन मीट्रिक टन (9 MMTPA) कच्चे तेल को प्रोसेस करेगा। रिफाइनरी ईंधन के साथ-साथ सालाना 2.4 मिलियन टन पेट्रोकेमिकल उत्पादों का निर्माण करेगी, जिससे भारत की विदेशों पर निर्भरता कम होगी।

मारवाड़ को डबल इंजन का तोहफा

करीब 500 करोड़ की लागत से बना यह आधुनिक टर्मिनल हवाई कनेक्टिविटी को कई गुना बढ़ा देगा, जिससे यहां से अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के संचालन और पर्यटन को नई गति मिलेगी। वहीं रिफाइनरी के मुख्य प्रोसेस यूनिट्स का काम अंतिम चरण में है। इसके शुरू होते ही मारवाड़ क्षेत्र में प्लास्टिक, टेक्सटाइल और पॉलिमर जैसे सैकड़ों डाउनस्ट्रीम उद्योगों का जाल बिछेगा।

85% एथेनॉल से चलने वाली वैगन-आर 7.24 में मिलेगी

नई दिल्ली

मारुति सुजुकी ने सोमवार को भारत में पहली फ्लेक्स-फ्यूल कार वैगन-आर बायोफ्लेक्स लॉन्च कर दी है। नई वैगन-आर पूरी तरह से E85 फ्यूल (85% एथेनॉल मिक्स पेट्रोल) से चलेगी। वैगन-आर बायोफ्लेक्स को दो वैरिएंट में उतारा गया है। इसकी शुरुआती कीमत 7.24 लाख रुपए रखी गई है। कार फिलहाल टैक्सी और फ्लीट जैसे कमर्शियल सेक्टर के लोग खरीद सकेंगे। इसके डिजाइन में कोई बदलाव नहीं किया गया है, लेकिन श्व85 फ्यूल पर चलाने के लिए इंजन और अन्य पार्ट्स में तकनीकी बदलाव किए गए हैं। इसी वजह से यह स्टैंडर्ड मॉडल से 86 हजार रुपए महंगी है। वहीं, कमर्शियल सेगमेंट में मिलने वाली वैगनआर टूर H3 के मुकाबले इसका फ्लेक्स-फ्यूल वर्जन 1.35 लाख से 2.25 लाख रुपए तक महंगा है। वैगनआर टूर H3 की कीमत 4.99 लाख से 5.89 लाख रुपए के बीच है।

बंगाल पुलिस ने जहांगीर खान को दोबारा परेड कराई

कोलकाता

पश्चिम बंगाल के फालता में पुलिस ने TMC नेता जहांगीर खान की फिर हाफ पैंट में सड़क पर परेड कराई। इस दौरान जहांगीर ने कान पकड़कर और हाथ जोड़कर लोगों से माफी मांगते दिखे। पुलिस ने चार घंटे नंगे पैर सड़क पर घुमाया। इससे पहले 11 जून को भी फालता में ही जहांगीर की हाफ पैंट में परेड कराई गई थी। जांच के सिलसिले में पुलिस उन्हें फलता लेकर आई है। 8 जून को अवैध वसूली के आरोप में उन्हें नेपाल बॉर्डर से गिरफ्तार किया था। जहांगीर पर अवैध वसूली और महिलाओं को गैंगरेप की धमकी देने का आरोप है। जहांगीर का फालता में दबदबा था। जहांगीर खान ने चुनाव प्रचार के दौरान खुद को फिल्म 'पुष्पा' के किरदार की तरह पेश किया था। उन्होंने कई बार फिल्म का चर्चित डायलॉग 'पुष्पा झुकेगा नहीं साला' भी बोला था।

कॉकरोच जनता पार्टी के फाउंडर को युवकों ने थप्पड़ मारे:जयपुर में शिक्षा मंत्री प्रधान के इस्तीफे को लेकर प्रदर्शन था; समर्थकों ने हमलावरों को पीटा

जयपुर

जयपुर में कॉकरोच जनता पार्टी के फाउंडर अभिजीत दीपके को 2 युवकों ने थप्पड़ मारे हैं। इसके बाद पार्टी के समर्थकों ने उन दोनों युवकों को पकड़कर पीट दिया। अभिजीत सोमवार को नीट पेपर लीक, शिक्षा व्यवस्था, बेरोजगारी और युवाओं से जुड़े मुद्दों को लेकर प्रदर्शन में शामिल होने आए। शहीद स्मारक पर अभिजीत की अगुवाई में सैकड़ों प्रदर्शनकारी शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग कर रहे थे।

थप्पड़कांड के बाद अभिजीत दीपके ने प्रदर्शनकारियों को संबोधित किया। अभिजीत ने नारा लगाया कि 'हिंदू-मुस्लिम की राजनीति नहीं चलेगी, नहीं चलेगी।' हमें यह स्वतंत्रता कुर्बानियों के बाद मिली थीं। हमें हिंदू-मुस्लिम में बांटा जाता है। जाति धर्म में बांटा जाता है, लेकिन हमें इसमें नहीं फंसना है। सीजेपी फाउंडर अभिजीत दीपके ने कहा कि हम 20 जून को फिर दिल्ली चलेंगे। इस बार जब दिल्ली जाएंगे, तो बिना इस्तीफे के नहीं लौटेंगे। उन्होंने 'दिल्ली चलो' का नारा भी लगाया। राष्ट्रगान के साथ प्रदर्शन खत्म हो गया।

प्रदर्शन के दौरान कुछ युवकों के बीच नारेबाजी को लेकर विवाद हो गया। पुलिस ने एक युवक को हिरासत में ले लिया। धरना स्थल पर कई प्रदर्शनकारियों के मोबाइल भी चोरी हो गए। इसके बाद मंच से लोगों को मोबाइल और सामान की सुरक्षा करने की अपील की गई।

प्रदर्शन में शामिल युवा 'मुझे देश से प्यार है, भ्रष्टाचार अस्वीकार है' और 'पेपर लीक बंद करो' जैसे नारे लिखे पोस्टर और तिरंगा लेकर पहुंचे। कुछ महिलाएं अपने छोटे बच्चों के साथ प्रदर्शन में शामिल हुईं। कार्यकर्ताओं ने शहीद स्मारक के गेट पर कॉकरोच की तस्वीर बनाई और 'धर्मेंद्र प्रधान इस्तीफा दो' का नारा लिखा।

भारत का वस्तु निर्यात मई में सालाना आधार पर 18 प्रतिशत बढ़कर 45.2 अरब डॉलर रहा

नई दिल्ली

भारत का वस्तु निर्यात मई में सालाना आधार पर 18 प्रतिशत बढ़कर 45.2 अरब डॉलर हो गया है। अप्रैल में यह 43.56 अरब डॉलर था। यह जानकारी वाणिज्य मंत्रालय द्वारा सोमवार को जारी किए गए डेटा में दी गई। वाणिज्य सचिव राजेश अग्रवाल ने मई की वस्तु निर्यात वृद्धि को अब तक दर्ज की गई सबसे अधिक वृद्धि दर में से एक बताया। अप्रैल 2026 में भी वस्तु निर्यात में तेज बढ़ोतरी दर्ज की गई थी, और यह अप्रैल 2025 में 38.28 अरब डॉलर था।

वित्त वर्ष 2026-27 के अप्रैल-मई महीने में देश का कुल निर्यात 88.91 अरब डॉलर रहा है, जो कि पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 16.09 प्रतिशत की वृद्धि को दिखाता है।

अग्रवाल ने कहा कि भारत ने अप्रैल और मई दोनों महीनों में निर्यात में जबरदस्त बढ़ोतरी दर्ज की है, जबकि इसी दौरान आयात में भी तेज बढ़ोतरी हुई है। उन्होंने मीडिया से कहा, 'अगर हम इसी रफ्तार को बनाए रखते हैं, तो वित्त वर्ष 27 व्यापार के लिहाज से एक अच्छा साल होगा।'

मई में आयात 20.62 प्रतिशत बढ़कर 73.41 अरब डॉलर हो गया। इसके चलते व्यापार घाटा 28.21 अरब डॉलर रहा है। वहीं, मई 2025 में व्यापार घाटा 22.56 अरब डॉलर था, जो कि सालाना आधार पर 25.04 प्रतिशत की बढ़ोतरी को दर्शाता है। बीते महीने व्यापार घाटे में बढ़ोतरी की वजह पश्चिम एशिया में तनाव के कारण कच्चे तेल का दाम 100 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर जाना है।

स्लोवाकिया के प्रधानमंत्री ने पीएम मोदी को 'असाधारण उपलब्धि' की दी बधाई, बोले- 'ये राजनीतिक चमत्कार'

ब्रातिस्लावा।

स्लोवाकिया के पीएम रॉबर्ट फिचो ने भारत के अपने समकक्ष प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को ऐतिहासिक उपलब्धि की बधाई दी। भारत के सबसे लंबे समय तक लगातार निर्वाचित प्रधानमंत्री बने रहने को उन्होंने 'राजनीतिक चमत्कार' करार दिया। ब्रातिस्लावा में पीएम मोदी के साथ संयुक्त प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए फिचो ने भारत में राजनीतिक स्थिरता और पीएम मोदी के नेतृत्व की सराहना की। उन्होंने कहा, 'इतने विविध और जटिल राजनीतिक माहौल में लगातार 12 वर्षों तक नेतृत्व बनाए रखना असाधारण उपलब्धि है।' स्लोवाकिया के पीएम ने आगे कहा, 'मैं उस राजनीतिक स्थिरता को नजरअंदाज नहीं कर सकता जिसका आप प्रतिनिधित्व करते हैं। मैं आपको बधाई देता हूं कि आप भारत के सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले प्रधानमंत्री हैं।' उन्होंने आगे कहा, 'यह उपलब्धि एक राजनीतिक चमत्कार के समान है, और यह भारत की लोकतांत्रिक ताकत और नेतृत्व क्षमता को दर्शाती है।'

इससे पहले फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने भी मंच से पीएम मोदी को इस उपलब्धि पर बधाई दी थी और कहा था कि यह भारत की मजबूती और नेतृत्व की निरंतरता को दर्शाता है। नीस में भारत इनोवेट्स 2026 के उद्घाटन समारोह में उन्होंने पीएम मोदी की मौजूदगी को गौरवान्वित करने वाला क्षण बताया।

कुमकुम भाग्य एक्ट्रेस संचिता उगले ने सुसाइड किया

साड़ी का फंदा बनाकर फांसी लगाई, पंखे से लटकी मिली बॉडी; मौत से कुछ घंटे पहले रील पोस्ट की

मुंबई

टीवी एक्ट्रेस संचिता उगले ने रविवार रात को सुसाइड कर लिया। वे 22 साल की थीं। पुलिस ने बताया कि एक्ट्रेस का शव घर में सीलिंग फैन से लटका मिला। उन्होंने साड़ी का फंदा बनाकर फांसी लगाई।

सहायक पुलिस निरीक्षक विनोद वाघ ने मीडिया को दिए बयान में कहा, 'हमारी टीम सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची। वहां कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। कोई सुसाइड नोट भी नहीं मिला। घटना के समय वे घर में अकेली थीं। उनके पिता ने बेटी की मौत के लिए किसी को जिम्मेदार नहीं ठहराया।'

संचिता अपने माता-पिता के साथ महाराष्ट्र के पालघर में रहती थीं। रविवार शाम करीब 5:30 बजे उनकी बहन अंजली घर से बाहर गई थी। उस समय घर में कोई मौजूद नहीं था। इसी दौरान संचिता ने अपने बेडरूम के सीलिंग फैन से साड़ी के सहारे फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। उन्हें तुरंत महानगरपालिका के तुलिंज अस्पताल में भर्ती कराया गया, लेकिन डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। वे टीवी सीरियल 'कुमकुम भाग्य' और 'वागले की दुनिया' में नजर आई थीं।

इजराइल का यूएस-ईरान शांति समझौते को मानने से इनकार

नेतन्याहू के मंत्री बोले- लेबनान से पीछे नहीं हटेंगे, हम अमेरिका के गुलाम नहीं

तेहरान/वॉशिंगटन डीसी

इजराइल ने अमेरिका और ईरान के बीच होने वाले शांति समझौते को मानने से इनकार कर दिया है। रक्षा मंत्री इजराइल काट्ज ने भी कहा है कि, उनकी सेना दक्षिणी लेबनान से पीछे नहीं हटेगी। लेबनान, सीरिया और गाजा में बनाए गए सिक्योरिटी जोन में इजराइली सेना अनिश्चितकाल तक तैनात रहेगी।

वहीं, इजराइल के राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री इतमार बेन ग्वीर ने पीस डील पर नाराजगी जताते हुए कहा, 'हम अमेरिका के गुलाम नहीं है। इजराइल एक आजाद देश हैं और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का यह समझौता इजराइल पर लागू नहीं होता।'

इधर, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने बताया कि अमेरिका-ईरान 19 जून को स्विट्जरलैंड के जेनेवा में पीस डील पर दस्तखत करेंगे। अगर ऐसा होता है तो 47 साल में तेहरान और वॉशिंगटन के बीच यह पहली हाई लेवल बैठक होगी।

ईरान ने दस्तखत करने से पहले 3 शर्तें रखीं

ईरान-अमेरिका के बीच हुए समझौते का पूरा दस्तावेज अभी जारी नहीं किया गया है। ईरान के उप विदेश मंत्री काजेम गरीबाबादी ने कहा है कि स्ध पर हस्ताक्षर होने के बाद शुरू होने वाली 60 दिन की अमेरिका-ईरान की बातचीत इस बात पर निर्भर करेगी कि अमेरिका पहले अपने तीन वादे पूरे करता है या नहीं। गरीबाबादी के मुताबिक अमेरिका को तीन कदम उठाने होंगे- 1. नौसैनिक नाकेबंदी खत्म करना, 2. युद्ध और सभी सैन्य कार्रवाइयों को रोकना, 3. ईरान के फ्रीज्ड फंड जारी करना।

शहबाज ने समझौते का सबसे पहले ऐलान किया

पाकिस्तानी पीएम ने सबसे पहले सीजफायर समझौते का ऐलान किया। उन्होंने कहा कि लेबनान समेत सभी मोर्चों पर सैन्य कार्रवाई तुरंत और हमेशा के लिए रोकने पर सहमति जताई है।

ट्रम्प ने लेबनान के बेरूत पर हुए इजराइली हमले की आलोचना की है। उन्होंने कहा कि यह हमला ऐसे समय हुआ, जब अमेरिका और ईरान के बीच संभावित शांति समझौता बेहद करीब है।

इजराइली हमलों के कारण पीस डील टली

ट्रम्प ने कहा था कि लेबनान पर इजराइली हमलों की वजह से ईरान के साथ पीस डील की साइनिंग कुछ घंटों के लिए टल गई।

संपादकीय

जहाजों पर हमले और अंतरराष्ट्रीय कानूनों की अनदेखी

पश्चिम एशिया में ईरान के खिलाफ अमेरिका-इजराइल के युद्ध की आग की चपेट में अब वैसे देश और लोग भी आने शुरू हो चुके हैं, जो पूरी तरह तटस्थ हैं और वे सिर्फ जरूरी आपूर्ति सुनिश्चित करने की उम्मीद में उस क्षेत्र में मौजूद हैं। कायदे से आम लोगों की जरूरतों के मद्देनजर अपनी ड्यूटी करने वाले अन्य देशों के लोगों को किसी भी पक्ष की ओर से निशाना नहीं बनाया जाना चाहिए, लेकिन हाल में अमेरिका ने इस मामले में जिस स्तर की लापरवाही और मनमानी दिखाई है, उससे यही लगता है कि उसे सामान्य स्थिति के बहाल होने की कोई फिक्र नहीं है।

वरना क्या वजह है कि पिछले तीन-चार दिनों के भीतर उसने उस क्षेत्र में मौजूद तीन भारतीय जहाजों को निशाना बनाया। उसे यह समझना क्यों जरूरी नहीं लगा कि वह जिन जहाजों पर हमला कर रहा है, वे वाणिज्यिक हैं और किसी भी रूप में इस युद्ध का हिस्सा नहीं हैं?

गौरतलब है कि ओमान तट के पास एक वाणिज्यिक जहाज 'सेट्टेबेलो' पर अमेरिका की ओर से किए गए एक हमले में तीन भारतीय नाविकों की जान चली गई। जहाज पर चौबीस लोग सवार थे, जिनमें से इक्कीस को किसी तरह बचा लिया गया। इससे पहले सोमवार को मारिवेक्स नाम के तेल टैंकर पर भी हमला किया गया था, जिसके बाद भारतीय नाविकों ने मदद के लिए आपात संदेश भेजा था।

अब गुरुवार को ओमान के शिनास बंदरगाह के पास एक वाणिज्यिक जहाज एमटी जलवीर पर भी हमला किया गया। हालांकि इन दोनों घटनाओं में सभी नाविकों को बचा लिया गया। सवाल है कि अमेरिका के लिए यह समझना मुश्किल क्यों हो रहा है कि ईरान के साथ जारी उसके युद्ध के क्रम में अगर तटस्थ देशों के वाणिज्यिक जहाजों को निशाना बनाया जाता है, तो अन्य मोर्चों पर कैसी जटिल स्थिति खड़ी हो सकती है।

दुनिया के कई देश पहले ही गंभीर ऊर्जा संकट का सामना कर रहे हैं। जिन वाणिज्यिक जहाजों पर हमला किया गया, वे किसी भी रूप में युद्ध का हिस्सा नहीं थे। मगर बिना किसी मजबूत आधार या उकसावे के अमेरिका ने हमला किया। शायद उसे अब यह सोचने की जरूरत है कि उसके रवैये और जिद का हासिल क्या सामने आ रहा है।

यह बेवजह नहीं है कि भारत ने हमले और उसमें नाविकों के मारे जाने पर अमेरिकी दूतावास के प्रभारी अधिकारी को तलब कर अपनी तीखी आपत्ति दर्ज की। विदेश मंत्रालय ने मध्य-पूर्व में संवेदनशील सुरक्षा हालात पर गहरी चिंता जाहिर करते हुए समुद्र में वाणिज्यिक जहाजों पर हमले को भू-राजनीतिक शत्रुता का नतीजा बताया।

एक ओर ईरान ने होर्मुज जलमार्ग को बाधित किया हुआ है, तो दूसरी ओर अमेरिका ने उस समूचे इलाके में नाकेबंदी कर रखी है। आखिर क्या वजह है कि भारत या किसी देश के वाणिज्यिक जहाजों और नागरिक बुनियादी ढांचों को निशाना बनाने में भी उसे कोई हिचक नहीं हो रही है? होर्मुज या अन्य समुद्री मार्गों पर निर्बाध आवाजाही बहाल किया जाना इसलिए भी जरूरी है कि सिर्फ उसकी वजह से दुनिया के कई देशों में ऊर्जा और तेल की आपूर्ति बुरी तरह बाधित है और इसका विपरीत असर बड़े दायरे में जनजीवन पर पड़ रहा है। विडंबना यह है कि जहां युद्ध के बावजूद वाणिज्यिक जहाजों के लिए सुरक्षित रास्ता तैयार किया जाना चाहिए था, वहीं बिना किसी आधार के इन जहाजों पर हमले किए जा रहे हैं। सवाल है कि वर्चस्व की जंग के बीच अमेरिका की नजर में क्या अंतरराष्ट्रीय कानूनों की कोई अहमियत रह गई है?

647 कॉलोनियां अब भी अवैध, निगम सिर्फ 154 को ही कर पाया वैध

● विकास शुल्क और प्रशासनिक अड़चनों में फंसी नियमितीकरण प्रक्रिया, 12 करोड़ जमा होने के बाद भी विकास कार्य अधूरे

इंदौर। शहर की अवैध कॉलोनियों को वैध करने की नगर निगम की बहुप्रचारित योजना अभी भी अधूरी पड़ी है। वर्षों से चल रही इस प्रक्रिया के बावजूद शहर की 647 कॉलोनियां आज भी नियमितीकरण का इंतजार कर रही हैं, जबकि निगम अब तक केवल 154 कॉलोनियों को ही वैध कर सका है। कॉलोनीवासियों को उम्मीद थी कि वैधीकरण के बाद उन्हें मूलभूत सुविधाएं और संपत्तियों को कानूनी मान्यता मिलेगी, लेकिन प्रक्रिया विकास शुल्क और विभिन्न प्रशासनिक अड़चनों में उलझकर रह गई है। नगर निगम द्वारा तय किए गए विकास शुल्क को लेकर भी रहवासियों में नाराजगी है। 1533 वर्गफीट के एक प्लॉट पर लगभग 1.15 लाख रुपए विकास शुल्क निर्धारित किया गया है। रहवासियों का कहना है कि इतनी बड़ी राशि जमा करना अधिकांश परिवारों के लिए आसान नहीं है, इसलिए शुल्क में कमी की मांग लगातार उठ रही है। इसके चलते बड़ी संख्या में कॉलोनीवासी शुल्क जमा करने से पीछे हट रहे हैं। जानकारी के अनुसार अब तक केवल 33 कॉलोनियों के रहवासियों ने विकास शुल्क जमा कराया है। इससे निगम के खाते में 12 करोड़ रुपए से अधिक राशि पहुंच चुकी है, लेकिन इसके बावजूद कई कॉलोनियों में सड़क, नाली, पेयजल और स्ट्रीट लाइट जैसे विकास कार्य शुरू नहीं हो पाए हैं। इससे रहवासियों में असंतोष बढ़ रहा है। नगर निगम के सामने केवल शुल्क वसूली ही चुनौती नहीं है। कई कॉलोनियां भूमि उपयोग विवाद, विभिन्न विभागों की आपत्तियों, एनओसी की कमी और नियोजन मानकों के उल्लंघन जैसी समस्याओं में फंसी हुई हैं। यही कारण है कि नियमितीकरण की प्रक्रिया लगातार धीमी पड़ रही है। हाल ही में भी सैकड़ों अवैध कॉलोनियों के मामलों में विभिन्न विभागों की आपत्तियों के कारण प्रक्रिया अटकने की बात सामने आई थी। शहर के रहवासियों का कहना है कि यदि उनसे विकास शुल्क लिया जा रहा है तो विकास कार्यों की शुरुआत भी समयबद्ध तरीके से होनी चाहिए। उनका आरोप है कि करोड़ों रुपए जमा होने के बाद भी अधिकांश कॉलोनियों में हालात जस के तस बने हुए हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि जब तक विकास शुल्क की दरों, विभागीय अनुमतियों और भूमि संबंधी विवादों का समाधान नहीं होगा, तब तक इंदौर की सैकड़ों अवैध कॉलोनियों को वैध बनाने का लक्ष्य अधूरा ही रहेगा।

बरलाई शुगर मिल की जमीन के बदले 10 एकड़ भूमि देने की मांग, 16 जून को करेंगे धरना

इंदौर। बरलाई शक्कर फैक्ट्री की जमीन के अधिग्रहण और उसके बदले उचित मुआवजा नहीं मिलने के विरोध में किसानों ने आंदोलन का ऐलान किया है। शेयरधारी किसान संघर्ष समिति ने मांग की है कि बरलाई शुगर मिल की भूमि के बदले क्षेत्र के विकास के लिए कम से कम 10 एकड़ जमीन अस्पताल, स्टेडियम, कॉलेज और क्रिकेट मैदान जैसी सार्वजनिक सुविधाओं के लिए आरक्षित की जाए। समिति के प्रतिनिधि हंसराज मंडलोई और दुग्ध संघ इंदौर के पूर्व अध्यक्ष मोती सिंह पटेल ने बताया कि 16 जून को सुबह 10 बजे से शाम 4 बजे तक धरना-प्रदर्शन आयोजित किया जाएगा। इसके बाद राष्ट्रपति के नाम संबोधित ज्ञापन प्रशासनिक अधिकारियों को सौंपा जाएगा। किसान नेताओं का कहना है कि करीब 50 वर्ष पूर्व किसानों ने बरलाई शक्कर फैक्ट्री की स्थापना के लिए एक-एक हजार रुपये के शेयर खरीदे थे। उस समय भूमि की कीमत 400 से 500 रुपये प्रति बीघा थी। उनका तर्क है कि यदि किसान उस समय शेयर खरीदने के बजाय जमीन खरीदते, तो आज करोड़ों रुपये की संपत्ति के मालिक होते। संघर्ष समिति का आरोप है कि फैक्ट्री की भूमि अब औद्योगिक उपयोग के लिए उपलब्ध कराई जा चुकी है और कई कंपनियों को भूखंडों का आवंटन भी किया गया है। ऐसे में किसानों को वर्तमान बाजार दर के अनुसार भूमि मूल्य का चार गुना मुआवजा दिया जाना चाहिए। किसानों ने मांग रखी है कि प्रभावित परिवारों के युवाओं को गारमेंट पार्क में रोजगार दिया जाए तथा जो युवा स्वयं का उद्योग स्थापित करना चाहते हैं, उन्हें फैक्ट्री परिसर में औद्योगिक प्लॉट उपलब्ध कराए जाएं। साथ ही क्षेत्र के विकास के लिए 10 एकड़ भूमि सार्वजनिक सुविधाओं हेतु आरक्षित करने की मांग भी की गई है।

भारत की बढ़ती परमाणु ताकत से चौकन्ना अंतरराष्ट्रीय जगत?

भारत की बढ़ती परमाणु शक्ति से दुनिया में व्यापक भय कम और रणनीतिक सतर्कता अधिक है, क्योंकि भारत की सैन्य, आर्थिक और कूटनीतिक ताकत जितनी बढ़ेगी, उसकी परमाणु क्षमताओं पर वैश्विक चर्चा और निगरानी भी उतनी ही बढ़ेगी। भारत आज उन चुनिंदा देशों में शामिल है जिनकी सामरिक शक्ति वैश्विक शक्ति-संतुलन को प्रभावित करने की क्षमता रखती है। दरअसल, एसआईपीआरआई 2026 रिपोर्ट का संदेश यह है कि भारत की परमाणु शक्ति में वृद्धि संख्या के स्तर पर सीमित है, लेकिन उसकी गुणवत्ता, तैनाती और परिचालन क्षमता में हो रहे बदलाव कहीं अधिक महत्वपूर्ण माने जा रहे हैं। ताज़ा एसआईपीआरआई रिपोर्ट के अनुसार भारत की परमाणु क्षमता में क्रमिक लेकिन महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। एसआईपीआरआई ईयरबुक 2026 के अनुसार भारत की परमाणु क्षमता में लगातार वृद्धि और आधुनिकीकरण जारी है।

कमलेश पांडे

एसआईपीआरआई ने पहली बार आकलन किया है कि भारत के लगभग 12 परमाणु वारहेड 'तैनात' अवस्था में हैं। पहले भारत आमतौर पर वारहेड और डिलीवरी सिस्टम (मिसाइल/विमान) को अलग-अलग रखता था। भारत का परमाणु आधुनिकीकरण अब अधिकाधिक चीन तक पहुंच रखने वाली लंबी दूरी की मिसाइलों, समुद्री प्रतिरोधक क्षमता और नई डिलीवरी प्रणालियों पर केंद्रित है। भारत का परमाणु आधुनिकीकरण अब अधिकाधिक लंबी दूरी की उन प्रणालियों पर केंद्रित है जो पूरे चाइना तक पहुंचने में सक्षम हों। भारत की रणनीतिक योजना में पाकिस्तान के साथ पारंपरिक प्रतिद्वंद्विता अभी भी महत्वपूर्ण है, लेकिन चीन को ध्यान में रखकर भी क्षमताओं का विस्तार किया जा रहा है।

भारत की परमाणु त्रिस्तरीय क्षमता (भूमि, वायु और समुद्र आधारित प्रतिरोधक शक्ति) परिपक्व हो रही है और समुद्र-आधारित प्रतिरोधक क्षमता को विशेष महत्व दिया जा रहा है। एसआईपीआरआई का कहना है कि भारत उन देशों में शामिल है जो अपने परमाणु शस्त्रागार का आधुनिकीकरण कर रहे हैं। विशेष चिंता इस बात को लेकर है कि वैश्विक स्तर पर परमाणु हथियारों की भूमिका फिर बढ़ रही है और कई देश अधिक परिचालन-तत्पर परमाणु बल विकसित कर रहे हैं। रिपोर्ट यह भी कहती है कि भारत केवल वारहेड की संख्या नहीं बढ़ा रहा, बल्कि नई मिसाइल प्रणालियां, लंबी दूरी की क्षमताएं, एमआईआरवी तकनीक तथा समुद्री परमाणु प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर रहा है। इससे भारत की 'द्वितीय प्रहार क्षमता' और अधिक मजबूत होती है।

आवश्यक नहीं, क्योंकि भारत को अक्सर एक जिम्मेदार परमाणु शक्ति के रूप में देखा जाता है, जिसने अपेक्षाकृत संयमित परमाणु नीति अपनाई है। फिर भी, क्योंकि परमाणु हथियारों का प्रभाव वैश्विक होता है, इसलिए भारत की बढ़ती क्षमता को लेकर दुनिया में स्वाभाविक रूप से रणनीतिक विश्लेषण, निगरानी और सतर्कता बनी रहती है। अधिकांश पश्चिमी देशों और रणनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि भारत का परमाणु कार्यक्रम मुख्यतः 'विश्वसनीय न्यूनतम प्रतिरोध' और 'पहले उपयोग नहीं' जैसे सिद्धांतों पर आधारित रहा है। इसलिए भारत को आमतौर पर एक जिम्मेदार परमाणु शक्ति के रूप में देखा जाता है। हालांकि उसके पड़ोसी देशों और कुछ रणनीतिक प्रतिद्वंद्वियों के लिए उसकी बढ़ती क्षमता चिंता का विषय हो सकती है।

भारत अब केवल दक्षिण एशिया की नहीं, बल्कि व्यापक एशियाई शक्ति-संतुलन की गणना में शामिल हो चुका है। चीन और पाकिस्तान दोनों को ध्यान में रखकर भारत अपनी प्रतिरोधक क्षमता को उन्नत कर रहा है। एशिया में चीन, भारत और पाकिस्तान के बीच सामरिक संतुलन आने वाले वर्षों में वैश्विक सुरक्षा विमर्श का प्रमुख विषय बना रह सकता है। दूसरा, भारत की 'विश्वसनीय न्यूनतम प्रतिरोध' नीति बरकरार है, लेकिन परिचालन तत्परता बढ़ने के संकेतों ने वैश्विक रणनीतिक समुदाय का ध्यान आकर्षित किया है। इस प्रकार से भारत अब केवल न्यूनतम प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने तक सीमित नहीं दिख रहा, बल्कि उसकी प्रतिरोधक क्षमता अधिक विश्वसनीय और त्वरित प्रतिक्रिया योग्य बन रही है।

समुद्र-आधारित परमाणु क्षमता और लंबी दूरी की मिसाइलों के कारण भारत की 'दूसरे प्रहार' की क्षमता मजबूत हो रही है।

ताज़ा एसआईपीआरआई रिपोर्ट भारत को एक ऐसी परमाणु शक्ति के रूप में देखती है जो संख्या की दृष्टि से धीरे-धीरे बढ़ रही है, लेकिन उससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि उसकी परमाणु क्षमता पहले की तुलना में अधिक आधुनिक, तैनात और परिचालन रूप से सक्षम होती जा रही है। भारत की परमाणविक क्षमता को लेकर दुनिया में जो सतर्कता और रणनीतिक चिंता दिखाई देती है, उसके पीछे कई भू-राजनीतिक और सामरिक कारण हैं। यह चिंता केवल भारत तक सीमित नहीं है; किसी भी परमाणु शक्ति के बारे में वैश्विक समुदाय इसी प्रकार सतर्क रहता है। एशिया में बदलता शक्ति-संतुलनः भारत आज एशिया की प्रमुख शक्तियों में से एक है। उसकी बढ़ती सैन्य और आर्थिक क्षमता का प्रभाव सीधे चीन, पाकिस्तान और व्यापक हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर पड़ता है। इसलिए भारत की परमाणु शक्ति में हर वृद्धि क्षेत्रीय रणनीतिक समीकरणों को प्रभावित करती है।

एशिया के दो परमाणु पड़ोसियों के साथ जटिल संबंधः भारत की सीमाएं दो परमाणु-संपन्न देशों—चीन और पाकिस्तान से जुड़ी हैं। सीमा विवाद, आतंकवाद और क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा के कारण किसी भी संकट की स्थिति में परमाणु आयाम जुड़ जाने की आशंका रणनीतिक विशेषज्ञों को चिंतित रखती है।

लंबी दूरी की मिसाइलों का विकासः भारत की उन्नत मिसाइल प्रणालियां उसकी प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाती हैं। लेकिन जब कोई देश दूरस्थ लक्ष्यों तक मार करने वाली क्षमता विकसित करता है, तो अन्य देश उसके दीर्घकालिक सामरिक उद्देश्यों और शक्ति-प्रक्षेपण क्षमता का अध्ययन करने लगते हैं। भारत की अग्नि 5 और उससे आगे विकसित हो रही मिसाइल प्रणालियां एशिया के बड़े हिस्से तक पहुंचने में सक्षम हैं। इससे भारत की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ी है, जो वैश्विक रणनीतिक समीकरणों को प्रभावित करती है।

हिंद महासागर का बढ़ता महत्वः भारत की समुद्री परमाणु क्षमता, विशेषकर परमाणु पनडुब्बियों की तैनाती, हिंद महासागर क्षेत्र में उसकी रणनीतिक स्थिति को मजबूत करती है। यह क्षेत्र वैश्विक व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसलिए यहां शक्ति-संतुलन में बदलाव दुनिया का ध्यान आकर्षित करता है। इससे हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शक्ति संतुलन बना है। भारत की बढ़ती सामरिक ताकत का सीधा प्रभाव एशिया के शक्ति-संतुलन पर पड़ता है। विशेषकर चीन और पाकिस्तान भारत की सैन्य क्षमताओं पर बारीकी से नजर रखते हैं। इससे क्षेत्रीय हथियार प्रतिस्पर्धा बढ़ने की आशंका बनी रहती है।

वैश्विक शक्ति के रूप में भारत का उदयः भारत केवल सैन्य शक्ति नहीं, बल्कि एक बड़ी अर्थव्यवस्था, तकनीकी केंद्र और उभरती वैश्विक कूटनीतिक शक्ति भी है। जब किसी देश का वैश्विक प्रभाव बढ़ता है, तो उसकी परमाणु क्षमता का महत्व भी बढ़ जाता है। इसलिए प्रमुख शक्तियां भारत की रक्षा और परमाणु नीतियों पर विशेष नजर रखती हैं। अब भारत केवल परमाणु शक्ति ही नहीं, बल्कि तेजी से उभरती आर्थिक और भू-राजनीतिक शक्ति भी है। इसलिए विश्व की बड़ी शक्तियां भारत की सैन्य क्षमताओं को उसके बढ़ते अंतरराष्ट्रीय प्रभाव के संदर्भ में देखती हैं।

संकट प्रबंधन की चुनौतीः दुनिया की चिंता का एक कारण यह भी है कि परमाणु हथियारों से लैस देशों के बीच किसी भी सैन्य टकराव का प्रभाव सीमाओं से बहुत आगे तक जा सकता है। इसलिए अंतरराष्ट्रीय समुदाय चाहता है कि सभी परमाणु शक्तियां संयम, संवाद और विश्वसनीय कमान-नियंत्रण व्यवस्था बनाए रखें। परमाणु हथियारों के प्रसार को लेकर चिंताः दुनिया के अधिकांश देश चाहते हैं कि परमाणु हथियारों की संख्या और भूमिका सीमित रहे। किसी भी देश की बढ़ती परमाणु क्षमता को इसलिए भी सावधानी से देखा जाता है ताकि वैश्विक हथियार नियंत्रण व्यवस्था पर उसका प्रभाव समझा जा सके। भारत की बढ़ती सैन्य-तकनीकी क्षमताः भारत ने पिछले दो दशकों में अपनी परमाणु त्रिस्तरीय क्षमता को मजबूत किया है। यानी भारत अब भूमि, वायु और समुद्र—तीनों माध्यमों से परमाणु हथियार दागने की क्षमता रखता है। इसमें आईएनएस अरिहंत जैसी परमाणु पनडुब्बियों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

यही वजह है कि भारत की परमाणु शक्ति को लेकर दुनियावी सतर्कता का सबसे बड़ा कारण भय नहीं, बल्कि यह तथ्य है कि भारत अब वैश्विक शक्ति-संतुलन को प्रभावित करने वाली प्रमुख शक्तियों में शामिल हो चुका है। जितना बड़ा देश का सामरिक प्रभाव होगा, उतनी ही अधिक उसकी क्षमताओं, नीतियों और निर्णयों पर अंतरराष्ट्रीय नजर रहेगी। अंतरराष्ट्रीय मामलों के जानकार भी बताते हैं कि भारत की बढ़ती परमाणु क्षमताओं को लेकर दुनिया का दृष्टिकोण पूरी तरह 'घबराहट' का नहीं, बल्कि 'सतर्कता और रणनीतिक चिंता' का है।

दृष्टिकोण बदलते ही खुलने लगती हैं जीवन की नई संभावनाएं

हम अक्सर जीवन को एक तय कहानी की तरह देखने लगते हैं। जैसे हम वही हैं जो इस समय हैं और हमारे भीतर बदलने की कोई विशेष गुंजाइश नहीं है। हम अपनी पहचान को अपने वर्तमान हालात, उपलब्धियों या असफलताओं के आधार पर स्थिर मान लेते हैं। मगर सच यह है कि मनुष्य का जीवन किसी स्थिर रूप में बंधा हुआ नहीं होता। वह हर दिन अपने विचारों, अनुभवों और निर्णयों से बनता और बदलता रहता है। जीवन केवल घटनाओं का क्रम नहीं, बल्कि उन्हें देखने और समझने की प्रक्रिया भी है।

संध्या अग्रवाल

हम अपने बारे में जो मान लेते हैं, वही धीरे-धीरे हमारे व्यवहार का आधार बन जाता है। यदि कोई व्यक्ति स्वयं को कमजोर मानता है, तो वह चुनौतियों का सामना करने से पहले ही पीछे हटने लगता है। वह जोखिम लेने से बचता है और अवसरों को खो देता है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति स्वयं को सीखने और बदलने योग्य मानता है, वह कठिन परिस्थितियों में भी रास्ते खोजने लगता है।

यही अंतर आगे चलकर उसके जीवन की दिशा निर्धारित करता है। यहीं से यह समझ विकसित होती है कि जीवन केवल परिस्थितियों का परिणाम नहीं है, बल्कि दृष्टिकोण का भी परिणाम है। कोई समस्या मानकर रुक जाता है, तो कोई उसे अवसर मानकर आगे बढ़ता है।

हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं जहां तुलना बहुत सहज हो गई है। सोशल मीडिया और बाहरी दुनिया की चमक ने हमारे देखने के तरीके को प्रभावित किया है। हम दूसरों के जीवन का वह हिस्सा देखते हैं, जो सबसे बेहतर होता है, लेकिन उसके पीछे छिपा संघर्ष नहीं देख पाते। परिणाम यह होता है कि हम अपने जीवन को कमतर आंकने लगते हैं और यह मान लेते हैं कि हम पीछे हैं। यह तुलना धीरे-धीरे हमारे आत्मविश्वास को कमजोर करती है। व्यक्ति अपनी क्षमताओं पर संदेह करने लगता है। जबकि वास्तविकता यह होती है कि वह केवल एक अधूरी तस्वीर के आधार पर खुद को परख रहा होता है। यह स्थिति व्यक्ति को अपने वास्तविक स्वरूप से दूर कर देती है।

कई बार हम अपने अतीत के अनुभवों को ही अपनी पहचान बना लेते हैं। कुछ असफलताएं, कुछ गलत निर्णय या कुछ सीमित अवसर हमारे भीतर यह धारणा बना देते हैं कि हम ऐसे ही हैं और इससे आगे नहीं बढ़ सकते। धीरे-धीरे यह धारणा हमारी सोच की सीमा बन जाती है। अगर हम ठहरकर विचार करें, तो यह स्पष्ट होता है कि अतीत केवल एक अनुभव है, अंतिम सत्य नहीं।

मनुष्य की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वह सीख सकता है और बदल सकता है। इतिहास और समाज में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जहां लोगों ने विपरीत परिस्थितियों के बावजूद अपने जीवन की दिशा बदली है। यह बदलाव किसी चमत्कार से नहीं, बल्कि सोच में आए परिवर्तन से संभव हुआ है।

परिवर्तन का आरंभ भीतर से होता है। जब हम खुद को नए नजरिए से देखने लगते हैं, तो हमारी संभावनाएं भी खुलने लगती हैं। जो बातें पहले असंभव लगती थीं, वे धीरे-धीरे संभव लगने लगती हैं। यह बदलाव एक दिन में नहीं आता, बल्कि छोटे-छोटे प्रयासों और निरंतर अभ्यास से विकसित होता है। जो व्यक्ति हर समस्या को केवल बाधा मानता है, वह जल्दी हार मान लेता है। मगर जो व्यक्ति उसी समस्या को सीख के रूप में देखता है, वह समाधान खोजने का प्रयास करता है। धीरे-धीरे यही प्रयास उसे आगे बढ़ाते हैं और व्यक्ति अपने भीतर नई क्षमताएं विकसित कर लेता है।

यहां यह समझना भी जरूरी है कि सकारात्मक दृष्टिकोण का अर्थ समस्याओं को नकारना नहीं है। इसका अर्थ यह है कि हम समस्याओं को स्वीकार करते हुए भी उनसे घबराते नहीं हैं, बल्कि उनका सामना करने की मानसिक तैयारी रखते हैं। यही तैयारी व्यक्ति को मजबूत बनाती है।

हम अक्सर बाहरी बदलावों के पीछे भागते हैं—बेहतर नौकरी, बेहतर साधन, बेहतर माहौल। मगर भीतर का नजरिया नहीं बदलता, तो बाहर की उपलब्धियां भी स्थायी संतोष नहीं दे पातीं। इसके विपरीत, व्यक्ति का दृष्टिकोण संतुलित और सकारात्मक हो, तो वह सीमित परिस्थितियों में भी संतोष और अर्थ खोज सकता है।

इसीलिए जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह नहीं है कि हमारे पास क्या है, बल्कि यह है कि हमारे पास जो है, उसे किस दृष्टि से देख रहे हैं। एक ही स्थिति किसी के लिए अभाव बन सकती है और किसी के लिए अवसर। यह पूरी तरह हमारे सोचने के तरीके पर निर्भर करता है।

धीरे-धीरे यही सोच हमारे जीवन का स्वरूप तय करती है। अगर हम खुद को सीमाओं में देखेंगे, तो हमारा जीवन भी सीमित होता जाएगा, लेकिन हम अपने भीतर संभावनाएं देखना शुरू करेंगे, तो जीवन का विस्तार अपने आप होने लगेगा। यही वह बिंदु है, जहां व्यक्ति अपने जीवन की जिम्मेदारी स्वयं लेने लगता है।

यह समझना आवश्यक है कि जीवन कोई स्थिर ढांचा नहीं है। यह एक निरंतर बनने और बदलने वाली प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका हमारे विचारों, दृष्टिकोण और निर्णयों की होती है। हम जैसे अपने जीवन को देखते हैं, वैसा ही जीवन धीरे-धीरे हमारे सामने आकार लेने लगता है।

आज के समय में, जब मानसिक तनाव, असंतोष और आत्म-संदेह जैसी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं, यह और भी जरूरी हो जाता है कि हम अपने दृष्टिकोण पर ध्यान दें। केवल बाहरी उपलब्धियों से जीवन संतुलित नहीं होता, बल्कि भीतर की स्पष्टता और संतोष भी उतने ही आवश्यक हैं। अगर हम अपने भीतर सकारात्मक और यथार्थवादी दृष्टि विकसित कर लेते हैं, तो जीवन की जटिलताएं भी सहज लगने लगती हैं। आखिरकार जीवन का अर्थ परिस्थितियों में नहीं, बल्कि उन्हें देखने के हमारे ढंग में छिपा है। जब यह ढंग बदल जाता है, तो वही जीवन एक नई संभावना बन जाता है।

रोजाना सुबह साइकिल चलाने के 5 फायदे

साइकिल चलाने से न केवल आपका शरीर स्वस्थ्य रहता है बल्कि ये मेंटल हेल्थ के लिए भी यह काफी फायदेमंद है। आप इसे वर्कआउट के लिए भी इस्तेमाल कर सकते हैं। आइए जानते है साइकिल चलाने के फायदे, विश्व साइकिल दिवस का इतिहास, किन लोगों को नहीं करनी चाहिए साइकिलिंग और इससे जुड़ी तमाम जानकारी।

वजन घटाने के लिए आप साइकिलिंग कर सकते हैं। इसे चलाने से कैलोरी बर्न होती है। इससे आपको वजन कम करने काफी मदद मिलती है।

पैसों की बचत

अगर आप आसपास कहीं जाने के लिए साइकिल का इस्तेमाल करते हैं तो ऐसा करने से आपके पेट्रोल के पैसे बचेंगे। साथ ही ट्रेफिक में फंसने की दिक्कत नहीं होगी।

साइकिलिंग करना एक कार्डियोवैस्कुलर एक्सरसाइज है। ऐसा करने से आपका शरीर मजबूत बनता है। साथ ही कई तरह की बीमारियों से बचाव को तैयार होता है।

चिंता करे कम

कई रिसर्च में ये बात साबित हो चुकी है कि जब शरीर में हार्मोन रिलीज होता है तो इससे चिंता कम होती है। ऐसे में साइकिलिंग करने से स्ट्रेस कम होता है।

दिमाग करे तेज काम

साइकिलिंग करने से ब्रेन में ब्लड सर्कुलेशन बढ़ता है। इससे शरीर में ऑक्सीजन व न्यूट्रिएंट्स की मात्रा बढ़ती है। इससे दिमाग तेज काम करता है।

किन लोगों को नहीं करनी चाहिए साइकिलिंग?

घुटनों की समस्या से पीड़ित लोग

मिर्गी के दौरे वाले लोग

सांस की प्रॉब्लम से परेशान लोग

रोजाना कितनी देर चलाएं साइकिल?

यूं तो हर व्यक्ति की शरीर की क्षमता अलग-अलग होती है। ऐसे में कितनी देर साइकिल चलानी चाहिए वो लोगों की व्यक्तिगत क्षमताओं पर निर्भर करता है। लेकिन अगर वर्कआउट के लिए आपको साइकिलिंग करनी है तो आप रोजाना शुरुआती दिनों में करीब 15 मिनट साइकिल चला सकते हैं। वहीं अगर कोई व्यक्ति पूरी तरह स्वस्थ्य है तो रोजाना 30 मिनट आराम से साइकिल चला सकता है।

रोजाना सुबह साइकिलिंग करने के फायदे

रोजाना सुबह साइकिल चलाने से शरीर में एनर्जी आती है। क्योंकि इससे ब्लड सर्कुलेशन अच्छा होता है। इसके साथ ही पैरों, हाथों और कंधों की मांसपेशियां मजबूत होती हैं।

साइकिलिंग करते समय इन बातों का रखें ध्यान

साइकिल के ब्रेक, टायर और चेन की नियमित जांच करें। फ्लैट और सख्त जूते पहनें, ताकि पैडल पर सही पकड़ बने। साइकिल चलाते समय आरामदायक कपड़े पहनें। खाने के तुरंत बाद साइकिल न चलाएं। साइकिलिंग से पहले बहुत ज्यादा पानी न पिएं। अंधेरे में साइकिलिंग करने से बचें। लंबी दूरी तय करते समय पानी पीते रहें।

साइकिल से जुड़े रोचक तथ्य

विश्व की सबसे लंबी साइकिल 20 मीटर की थी। इसमें 35 लोग बैठे थे।

एक कार 15 साइकिल की जगह लेती है।

पहली साइकिल फ्रांस में बनाई गई थी।

फ्रेड ए बिर्चमोर नामक व्यक्ति ने 1935 में साइकिल से पूरे विश्व की सैर की थी।

नीदरलैंड में करीब 30 प्रतिशत ट्रिप साइकिल से की जाती हैं।

टूर डी फ्रांस दुनिया की सबसे प्रतिष्ठित और पुरानी साइकिलिंग रेस है।

विश्वभर में हर साल 100 मिलियन से भी ज़्यादा साइकिल निर्माण की जाती हैं।

डब्ल्यूएचओ के मुताबिक रोजाना साइकिल चलाने से वजन घटाने और पैरों को मजबूत बनाने में मदद मिलती है। ऐसे में आपको जब भी टाइम मिले रोजाना थोड़ी देर साइकिलिंग जरूर करें।

सोने से पहले पिएं ये चमत्कारिक चाय, बिस्तर पर जाते ही आएगी गहरी नींद

आज के समय भागदौड़ भरी जिंदगी के बीच लोगों में नींद न आने की समस्या आम हो गई है। कई लोग तो सोने के लिए बिस्तर पर समय से चले जाते हैं, लेकिन वे घंटों करवटें बदलते रह जाते हैं और उन्हें नींद नहीं आती है। अगर आप भी इस तरह की समस्या से जूझ रहे हैं, तो सोने से पहले दालचीनी की चाय का सेवन कर सकते हैं।

दिमाग को शांत करता है दालचीनी की चाय

दरअसल, अधिकतर किचन में दालचीनी का उपयोग खाने का स्वाद बढ़ाने के लिए किया जाता है। हालांकि, आप इससे चाय भी बना सकते हैं। दालचीनी में कई तरह के एंटीऑक्सिडेंट्स होते हैं, जो तनाव को कम करने के साथ-साथ दिमाग को भी शांत करते हैं।

'स्लीप टॉनिक' है दालचीनी

रात के समय सोने से करीब 30 मिनट पहले अगर आप दालचीनी की चाय का सेवन करते हैं, तो आपका शरीर रिलैक्स हो जाता है। इसके सेवन से दिनभर की थकावट भी कम होती है। रात के समय बार-बार नींद टूटने की समस्या भी इससे दूर हो जाती है।

कैसे बनाएं दालचीनी की चाय?

दालचीनी की चाय बनाने के लिए आप सबसे पहले एक पैन में पानी को गर्म करें। अब आप इसमें दालचीनी का एक छोटा टुकड़ा डाल दें। करीब 5-7 मिनट तक इसे धीमी आंच पर पकाएं। आप इसकी स्वाद को बढ़ाने के लिए इसमें शहद भी मिला सकते हैं। अब इसे छानकर कर पी लें। इसके सेवन से नींद की गुणवत्ता बेहतर होती है।

क्या गर्मियों में खजूर खा सकते हैं?

इस तरह डेली डाइट में करें शामिल

खजूर में कई तरह के पोषक तत्व पाए जाते हैं। इसमें फाइबर, आयरन, कैल्शियम, पोटैशियम, मैग्नीशियम और एंटीऑक्सीडेंट की भरपूर मात्रा होने के कारण इसे सुपरफूड कहा जाता है। इसे खाने से कई तरह के फायदे होते हैं। हालांकि, देश के कई हिस्सों में भीषण गर्मी पड़ रही है। इस मौसम में शरीर को ठंडा और हाइड्रेटेड रखना बेहद जरूरी होता है, जिसके कारण अधिकतर लोग गर्म चीजों के सेवन से परहेज करते हैं।

खजूर को डेली डाइट में करें शामिल

वैसे तो खजूर की तासीर गर्म होती है। हालांकि, आप इसको गर्मी के मौसम में भी सेवन कर सकते हैं। इस मौसम में भी इसे खाना पूरी तरह सुरक्षित होने के साथ-साथ फायदेमंद होता है। हालांकि, आप इसको सीमित मात्रा में ही सेवन कर सकते हैं। गर्म तासीर वाले होने के कारण भी इसको आप डेली डाइट में शामिल कर सकते हैं। अगर उचित मात्रा में आप सेवन करेंगे तो इससे बॉडी को फायदा पहुंचता है।

पोषक तत्वों का खजाना है खजूर

खजूर में फाइबर, आयरन, पोटैशियम, मैग्नीशियम, विटामिन ब्6 और कई तरह के एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं, जो शरीर की ऊर्जा को बढ़ाने के साथ-साथ गर्मी में कमजोरी, थकावट को कम करने के साथ-साथ पानी की कमी को भी पूरा करते हैं।

स्किन और बालों के लिए है फायदेमंद

गर्मी के मौसम में आप खजूर का सेवन कर सकते हैं। खजूर स्किन और बालों के लिए बेहद फायदेमंद होता है। इसमें मौजूद विटामिन ष्ट और एंटीऑक्सीडेंट त्वचा को भी चमकदार बनाते हैं और झुर्रियों को कम करते हैं। खजूर शरीर को अंदर से डिटॉक्स करता है, जिससे त्वचा स्वस्थ और दमकती नजर आती है।

बॉडी में बनी रहती है हाइड्रेशन

गर्मी के मौसम में शरीर से काफी संख्या में पसीना निकलता है। ऐसे में डिहाइड्रेशन का खतरा बढ़ जाता है। खजूर में इलेक्ट्रोलाइट्स और मिनरल्स अधिक पाए जाते हैं, जो बॉडी में पानी की कमी को संतुलित करते हैं। आप खजूर को रात के समय पानी में भिगोकर सुबह खा सकते हैं। इससे शरीर को ठंडक मिलती है और बॉडी हाइड्रेटेड रहती है।

वर्कआउट के बाद करें सेवन

गर्मी के मौसम में शरीर जल्दी थक जाता है। सूरज की तेज किरणों और पसीने से बॉडी की एनर्जी तुरंत खत्म हो जाती है। ऐसे में खजूर से आपको नेचुरल ऊर्जा मिल सकती है। दरअसल, इसमें नेचुरल शुगर होता है, जिसके सेवन से बॉडी को तुरंत ऊर्जा मिलती है। अगर आप हर रोज वर्कआउट करते हैं, तो आपको इसका सेवन जरूर करना चाहिए। आप इसे स्नैक्स में भी शामिल कर सकते हैं।

पाचन होता है बेहतर

गर्मी के मौसम में इसे खाने से पाचन बेहतर होता है। इसमें मौजूद तत्व पेट की आसानी से सफाई करते हैं। हर रोज दो से तीन खजूर खाने से पेट साफ रहता है। यह मेटाबॉलिज्म को भी बेहतर रखता है, जिससे पाचन मजबूत होता है।

तनाव को दूर करता है खजूर

खजूर खाने से तनाव दूर होता है। इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स, विटामिन ष्ट और मिनरल्स इम्यून को भी बूस्ट करते हैं। खजूर में प्राकृतिक शुगर और मैग्नीशियम होता है, जो दिमाग को शांत करता है और तनाव को कम करने में मदद करता है। हर रोज खजूर खाने से मानसिक थकान भी दूर होती है।

रातभर भिगोकर खाएं

खजूर को खाने के लिए आप इसे रातभर भिगोकर रख सकते हैं और सुबह खाली पेट खा सकते हैं। पानी में इसको भिगोकर खाने से इसकी गर्म तासीर कम होती है और शरीर को ठंडक भी मिलती है। इसको खाने से बॉडी में ऊर्जा मिलती है।

खजूर मिल्कशेक बनाएं

गर्मी के मौसम में आप खजूर मिल्कशेक भी बनाकर पी सकते हैं। यह स्वादिष्ट होने के साथ-साथ ताजगी भरा होता है। इसको बनाने के लिए दूध, खजूर और थोड़ा सा इलायची पाउडर मिलाकर अच्छे से ब्लेंड कर लें। यह एनर्जी बूस्टर की तरह काम करता है। जिम करने के बाद आप इसका सेवन कर सकते हैं।

खजूर खाने से पहले इन बातों का रखें ध्यान

खजूर खाने से पहले आपको कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए। गर्मियों के मौसम में दिन में सिर्फ 2 से 3 खजूर ही पर्याप्त हैं। इससे ज्यादा सेवन करने पर शरीर में गर्मी बढ़ सकती है।

खजूर को खाने के तुरंत बाद ठंडा पानी पीने से बचें। ठंडा पानी पीने से पाचन संबंधी कई तरह की परेशानियां भी हो सकती हैं। इसको रात के समय नहीं खाना चाहिए। इसे रात के समय सेवन से शरीर में गर्मी बढ़ सकती है।

दही में मिलाकर लगाएं ये 3 चीजें, गर्मियों में धूप की तरह खिल उठेगा चेहरा

गर्मी के मौसम में दही खाने से कई तरह के फायदे होते हैं। यह गर्मी में शरीर को ठंडक देता है। इसमें मौजूद प्रोबायोटिक्स पेट में अच्छे बैक्टीरिया को बढ़ावा देते हैं, जिससे पाचन भी बेहतर होता है। वैसे भी गर्मी के मौसम में पसीने के कारण शरीर में पानी की कमी हो जाती है। ऐसे में दही के सेवन से बॉडी हाइड्रेटेड रहती है।

वहीं, इस मौसम में चिलचिलाती धूप और पसीने के कारण चेहरे की रौनक चली जाती है। इसके कारण त्वचा पर टैनिंग और दाग-धब्बे भी होने लगते हैं। ऐसे में चेहरे को चमकदार और मुलायम बनाने के लिए दही काफी मददगार हो सकता है। दरअसल, दही एक नेचुरल कूलिंग एजेंट के रूप में काम करता है। भीषण गर्मी में यह त्वचा को ठंडक देने के साथ-साथ निखार भी लाता है। अगर त्वचा को नेचुरल तौर पर मुलायम और चमकदार बनाना चाहते हैं, तो आप भी दही में कुछ चीजों को मिलाकर उपयोग कर सकते हैं। इससे त्वचा गर्मी में भी चमकदार बनी रहेगी।

आप दही और बेसन को मिलाकर एक फेस पैक तैयार कर सकते हैं। इसको त्वचा पर लगाने से डेड स्किन हट जाती है और त्वचा की गहराई से सफाई हो जाती है। बेसन त्वचा के रंग को निखारता है और टैनिंग को भी कम करता है। आप इसको सप्ताह में दो बार भी आसानी से लगा सकते हैं।

दही और हल्दी का फेस पैक चेहरे को चमकदार और मुलायम बनाता है। इसमें कई तरह के एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं, जो त्वचा पर होने वाले संक्रमण को भी दूर करते हैं। अगर आपके चेहरे पर एक्ने और पिंपल्स भी हो गए हैं, तो आप इसका उपयोग कर सकते हैं। दही और हल्दी का पैक नेचुरल तौर पर त्वचा को चमकदार बनाता है।

गर्मी के मौसम में आप चेहरे पर दही और शहद का फेस पैक भी लगा सकते हैं। यह फेस पैक चेहरे को अंदर से मॉइस्चराइज करता है और त्वचा की नमी को बनाए रखता है। इसके उपयोग से त्वचा पर चमक आ जाती है। दही और शहद का फेस पैक ड्राई स्किन के लिए काफी कारगर होता है।

आप इन तीनों को मिलाकर एक फेस पैक तैयार कर सकते हैं या फिर अलग-अलग भी इसे तैयार कर सकते हैं। इस पेस्ट को चेहरे पर लगाने के बाद करीब 20 मिनट तक ऐसे ही छोड़ दें। कुछ समय के बाद ठंडे पानी से चेहरे को धो लें। आप इसे सप्ताह में दो से तीन बार उपयोग कर सकते हैं।

राजस्थान में प्री-मानसून की दस्तक : अलर्ट मोड पर सरकार, सक्रिय हुए 77 बाढ़ नियंत्रण कक्ष

चौबीसों घंटे पहरा, 3 शिफ्टों में 24 घंटे ड्यूटी रहेगी, रविवार व राजकीय अवकाश के दिनों में भी खुले रहेंगे कंट्रोल रूम

लोक टुडे। जयपुर

प्रदेश में मौसम के बदलते मिजाज और प्री-मानसून की धमाकेदार एंट्री के बीच भजनलाल सरकार पूरी तरह एक्शन मोड में आ गई है। मौसम विभाग द्वारा राज्य के कई हिस्सों में 70-80 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से अंधड़ और भारी बारिश का 'ऑरेंज अलर्ट' जारी होने के तुरंत बाद प्रशासन ने सुरक्षात्मक कदम उठाए हैं। जल संसाधन विभाग और आपदा प्रबंधन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 15 जून से पूरे राजस्थान में 77 जिला और ब्लॉक स्तरीय बाढ़ नियंत्रण कक्ष पूरी तरह सक्रिय कर दिए गए हैं। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार इस बार राजस्थान में मानसून कुछ दिन की देरी से प्रवेश कर सकता है, लेकिन प्री-मानसून की गतिविधियां अत्यंत तीव्र रहने वाली हैं। इसी के मद्देनजर सरकार ने समय रहते इस सुरक्षा तंत्र को जमीन पर उतार दिया है।

30 सितंबर तक चौबीसों घंटे पैनी नजर -

सरकारी आदेश के अनुसार यह विशेष आपातकालीन व्यवस्था 15 जून से शुरू होकर आगामी 30 सितंबर 2026 (अथवा मानसून की विदाई तक) निरंतर प्रभावी रहेगी।

आमजन की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए इन सभी 77 केंद्रों पर जल संसाधन विभाग के अभियंताओं और तकनीकी स्टाफ की तीन पारियों में राउंड-द-क्लॉक यानी 24 घंटे ड्यूटी लगाई गई है। राजकीय अवकाश और रविवार के दिनों में भी ये नियंत्रण कक्ष बिना किसी रुकावट के चालू रहेंगे, ताकि किसी भी अप्रिय स्थिति से तुरंत निपटा जा सके।

SDRF और सिविल डिफेंस की टीमें मुस्तैद -

आपदा प्रबंधन विभाग ने स्पष्ट किया है कि नियंत्रण कक्षों को सीधे स्टेट डिजास्टर रिस्पांस फोर्स और स्थानीय नागरिक सुरक्षा की रेस्क्यू टीमों से जोड़ा गया है। यदि किसी निचले इलाके में जलभराव या नदी-नालों में उफान के कारण ग्रामीण फंसते हैं, तो वायरलेस और हॉटलाइन के जरिए इसकी सूचना तुरंत रेस्क्यू टीम तक पहुंचेगी। सभी नियंत्रण कक्षों को पर्याप्त मात्रा में बचाव नौकाएं, लाइफ जैकेट, टॉर्च और मिट्टी के कट्टे तैयार रखने को कहा गया है।

कंट्रोल रूम की मुख्य जिम्मेदारियां:

लाइव सूचना : बांधों के गेट खोलने से पहले निचले इलाकों में मुनादी करवाकर अलर्ट जारी करना।
त्वरित राहत : जलभराव की स्थिति में भोजन पैकेट और आपातकालीन चिकित्सा सहायता सुनिश्चित करना।
कंट्रोल हेल्पलाइन : स्थानीय प्रशासन के माध्यम से आम जनता के लिए हेल्पलाइन नंबर जारी करना ताकि लोग जलभराव की शिकायत दर्ज करा सकें।

स्टेट फ्लड सेल रखेगा लाइव मॉनिटरिंग -

राजधानी जयपुर में एक केंद्रीय 'स्टेट फ्लड सेल' स्थापित किया गया है, जो राज्य स्तरीय मुख्य नियंत्रण कक्ष के रूप में कार्य करेगा। यह सेल प्रतिदिन सुबह और शाम राज्य के सभी छोटे-बड़े बांधों के जलस्तर, जलभराव वाले क्षेत्रों की स्थिति और विभिन्न जिलों में हुई वर्षा के लाइव आंकड़े संकलित कर दैनिक बुलेटिन जारी करेगा। बीसलपुर, जवाई, माही बजाज सागर और राणा प्रताप सागर जैसे बड़े बांधों पर विशेष तौर पर अतिरिक्त सतर्कता बरतने के निर्देश दिए गए हैं।

बूंदी में एसीबी की बड़ी कार्रवाई, ग्राम विकास अधिकारी 50 हजार रिश्वत लेते रंगे हाथ गिरफ्तार

बूंदी।

ए.सी.बी. मुख्यालय के निर्देश पर ए.सी.बी. इकाई बून्दी द्वारा कार्यवाही करते हुए आरोपी मुकेश कुमार पुत्र रामरतन जाति बैरवा उम्र 30 साल निवासी ग्राम जयस्थल थाना गेण्डोली जिला बून्दी हाल ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत गरडदा पंचायत समिति बून्दी द्वारा परिवादी की फर्म तरू एंड कम्पनी द्वारा ग्राम पंचायत गरडदा में पनघट का कार्य किया गया था उक्त कार्य का भुगतान करने की एवज में आरोपी को 50,000 हजार रूपये रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के महानिदेशक गोविंद गुप्ता ने बताया कि ए.सी.बी. चौकी बून्दी को एक शिकायत इस आशय की मिली कि आरोपी मुकेश कुमार ग्राम विकास अधिकारी ग्राम गरडदा पंचायत समिति बून्दी जिला बून्दी द्वारा परिवादी की फर्म तरू एंड कम्पनी द्वारा ग्राम पंचायत गरडदा पंचायत समिति बून्दी में पनघट का कार्य करने के लगभग 15 लाख रूपये के कार्यो के भुगतान की एवज में परिवादी से 30 प्रतिशत जो कि लगभग 4.50 लाख रूपये होता है, रिश्वत की मांग कर परिवादी को परेशान किया जा रहा था। जिस पर ए.सी.बी. कोटा रेंज के उप महानिरीक्षक ओमप्रकाश मीणा के सुपरवीजन में ए.सी.बी. बून्दी के अधिकारी प्रेमचन्द, उप पुलिस

अधीक्षक के नेतृत्व में आज मय ट्रेप टीम के ट्रेप कार्यवाही करते हुए आरोपी मुकेश कुमार को परिवादी से 50,000 रूपये रिश्वत राशि लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया गया है। आरोपी द्वारा परिवादी से प्राप्त की गई रिश्वत राशि आरोपी के किराये के मकान के बाहर परिवादी से ग्रहण कर अपनी पहनी हुई पेंट की जेब में रखी तथा एसीबी टीम को देखकर जेब से निकाल कर रोड पर गिरा दिये थे। एसीबी की अतिरिक्त महानिदेशक स्मिता श्रीवास्तव एवं महानिरीक्षक एस परिमला के निर्देशन में आरोपी से पूछताछ तथा कार्यवाही जारी है। ए.सी.बी. द्वारा मामले में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के अन्तर्गत प्रकरण दर्ज कर अग्रिम अनुसंधान किया जायेगा। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की टोल फ्री हेल्पलाइन नंबर 1064 एवं व्हाट्सएप हेल्पलाइन नंबर 941350 2834 पर 24*7 संपर्क कर भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियान में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे। एसीबी आपके वैध कार्य को करवाने में पूरी मदद करेगी।

6 साल बाद फाइलों से बाहर निकला उत्तरलाई एयरपोर्ट प्रोजेक्ट, मुआवजा राशि जारी

लोक टुडे। बाड़मेर

पश्चिमी राजस्थान के सीमावर्ती जिले बाड़मेर के लिए एक बेहद बड़ी और राहत भरी खबर है। क्षेत्र के सबसे बड़े और बहुप्रतीक्षित उत्तरलाई सिविल एयरपोर्ट प्रोजेक्ट को आखिरकार नई उड़ान मिल गई है। पिछले करीब छह वर्षों से फाइलों, बैठकों और प्रशासनिक प्रक्रियाओं में उलझी यह महत्वपूर्ण परियोजना अब धरातल पर उतरने के लिए पूरी तरह तैयार है। राज्य सरकार की ओर से हरी झंडी मिलने के बाद अब एयरपोर्ट निर्माण का रास्ता पूरी तरह साफ हो गया है।

किसानों को इसी सप्ताह मिलेगा मुआवजा -

प्रोजेक्ट की राह में सबसे बड़ी बाधा भूमि अधिग्रहण की थी, जिसे अब दूर कर लिया गया है। राज्य सरकार ने भूमि अधिग्रहण के लिए आवश्यक मुआवजा राशि जारी कर दी है। प्रशासनिक अधिकारियों के अनुसार इसी सप्ताह संबंधित किसानों को अवार्ड जारी कर दिए जाएंगे और मुआवजे की रकम सीधे उनके बैंक खातों में जमा करा दी जाएगी।

कुल 9 करोड़ का बजट, पहली किश्त प्राप्त -

एयरपोर्ट के लिए अधिग्रहित की जाने वाली भूमि के मुआवजे पर कुल 9 करोड़ रुपए खर्च होंगे। राज्य सरकार ने पहले चरण के तहत करीब 5 करोड़ रुपए की राशि बाड़मेर उपखंड प्रशासन को ट्रांसफर कर दी है। प्रशासन को सख्त निर्देश दिए गए हैं कि वे एक सप्ताह के भीतर अवार्ड जारी करने और भुगतान की प्रक्रिया को पूरा करें। भुगतान होते ही भूमि का स्वामित्व आधिकारिक तौर पर एयरपोर्ट निर्माण के लिए हस्तांतरित कर दिया जाएगा।

पश्चिमी राजस्थान को होगा फायदा -

उत्तरलाई एयरपोर्ट के शुरू होने से न केवल बाड़मेर बल्कि पूरे पश्चिमी राजस्थान की तस्वीर बदल जाएगी। बाड़मेर में देश का बड़ा ऑयल फील्ड और रिफाइनरी प्रोजेक्ट चल रहा है। एयरपोर्ट बनने से देश-विदेश के इंजीनियरों, निवेशकों और कॉर्पोरेट अधिकारियों का आवागमन आसान होगा। थार मरुस्थल, किराडू मंदिर और स्थानीय लोक संस्कृति को देखने आने वाले पर्यटकों को सीधे कनेक्टिविटी मिलेगी। हवाई सेवा शुरू होने से स्थानीय स्तर पर होटल, ट्रांसपोर्ट और लॉजिस्टिक्स सेक्टर में सैकड़ों नए रोजगार पैदा होंगे। गंभीर मरीजों को उच्च इलाज के लिए जोधपुर, जयपुर या अहमदाबाद ले जाने में समय की बचत होगी।

क्यों अटकी थी योजना?

उत्तरलाई में सिविल एन्क्लेव (नागरिक हवाई अड्डा) बनाने की मांग लंबे समय से चल रही थी। यह मूल रूप से भारतीय वायुसेना का एक रणनीतिक एयरबेस है। सेना और नागरिक उड्डयन विभाग के बीच समन्वय तकनीकी सर्वे और जमीन अधिग्रहण की जटिल प्रक्रियाओं के कारण यह प्रोजेक्ट पिछले छह साल से अटका हुआ था। लगातार उठती मांगों और स्थानीय जनभावनाओं को देखते हुए सरकार ने अब इस प्रक्रिया में तेजी दिखाई है।

मुख्यमंत्री ने सांगानेर में शहरी सेवा शिविर का किया निरीक्षण

नागरिकों से संवाद कर लिया योजनाओं का फीडबैक-

लाभार्थियों को पट्टे, प्रमाण पत्र, सहायता राशि के चेक एवं सहायक उपकरण का किया वितरण-

अधिकारियों को परिवेदनाओं एवं लंबित प्रकरणों के त्वरित निस्तारण के दिए निर्देश-

जयपुर।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को सांगानेर में आयोजित शहरी सेवा शिविर का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने शिविर में उपस्थित नागरिकों से संवाद कर सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं एवं शिविर के संबंध में फीडबैक लिया। मुख्यमंत्री ने विभिन्न विभागों द्वारा लगाई गई स्टॉल्स का अवलोकन किया। उन्होंने नामांतरण, भू-उपयोग परिवर्तन, सड़कों की मरम्मत एवं पेचवर्क कार्य, स्ट्रीट लाइटों की मरम्मत, भवन निर्माण स्वीकृति, सीवर कनेक्शन सहित विभिन्न बुनियादी सेवाओं की जानकारी ली और अधिकारियों को संवेदनशीलता के साथ त्वरित निस्तारण के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि शहरी सेवा शिविरों का उद्देश्य नागरिकों को राहत प्रदान करना और प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक समयबद्ध रूप से योजनाओं का लाभ पहुंचाना है।

मुख्यमंत्री ने विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को पट्टे, प्रमाण पत्र, भवन निर्माण स्वीकृति, प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के अंतर्गत सहायता राशि के चेक वितरित किए तथा विशेष योग्यजनों को सहायक उपकरण भी प्रदान किए। शिविर में पहुंचे लाभार्थी मुख्यमंत्री को अपने बीच पाकर उत्साहित नजर आए और उन्होंने सरकार की जनकल्याणकारी पहल के लिए आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास, स्वायत्त शासन विभाग, जयपुर विकास प्राधिकरण, जिला प्रशासन, जयपुर नगर निगम एवं संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

बाड़मेर में कांग्रेस का उग्र प्रदर्शन : बैरिकेड्स पर चढ़े सांसद उम्मेदाराम, पुलिस से तीखी धक्का-मुक्की, शिक्षा मंत्री के इस्तीफे की मांग

बाड़मेर।

देशव्यापी नीट (हृश्वश्वञ्ज) पेपर लीक घोटाला, लगातार बढ़ती बेतहाशा महंगाई और बाड़मेर जिले में गहराए पानी-बिजली के गंभीर संकट को लेकर सोमवार को जिला मुख्यालय पर यूथ कांग्रेस के बैनर तले एक विशाल 'जन आक्रोश रैली' का आयोजन किया गया। कलेक्ट्रेट घेराव के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं और पुलिस के बीच जबरदस्त झड़प, तीखी नोकझोंक और धक्का-मुक्की होने से कलेक्ट्रेट परिसर के बाहर घंटों हाई-वोल्टेज ड्रामा चलता रहा। जन आक्रोश आंदोलन का आगाज बाड़मेर के स्थानीय आदर्श स्टेडियम में एक विशाल जनसभा के साथ हुआ। सभा के पश्चात नवनिर्वाचित सांसद उम्मेदाराम बेनीवाल, कांग्रेस जिलाध्यक्ष लक्ष्मणसिंह गोदारा और युवा नेता अभिषेक चौधरी के नेतृत्व में हजारों कार्यकर्ताओं का हुजूम पारंपरिक ऊंट गाड़ों के साथ कलेक्ट्रेट के लिए रवाना हुआ। यह

आक्रोश मार्च नेहरू नगर ओवरब्रिज से होते हुए जैसे ही कलेक्ट्रेट के मुख्य द्वार पर पहुंचा, तो वहां कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैनात भारी पुलिस बल ने मजबूत बैरिकेडिंग कर प्रदर्शनकारियों को रोक लिया। प्रशासन द्वारा रोके जाने पर माहौल गरमा गया और आक्रोशित कांग्रेसी नेता व कार्यकर्ता बैरिकेड्स को पार करने का प्रयास करने लगे। इस दौरान खुद सांसद उम्मेदाराम बेनीवाल, जिलाध्यक्ष लक्ष्मणसिंह गोदारा, प्रदेश सदस्य ठाकराराम माली और युवा नेता अभिषेक चौधरी बैरिकेड्स के ऊपर चढ़ गए। इन्हें रोकने के लिए पुलिस को हल्के बल का प्रयोग करना पड़ा, जिससे दोनों पक्षों में भारी धक्का-मुक्की हुई। इस गहमा-गहमी के बीच एक पुलिसकर्मी द्वारा बैरिकेड्स पर चढ़े नेता ठाकराराम माली की टांग खींचकर नीचे उतारने का एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है।

बैरिकेड्स पर मचे भारी हंगामे और नारेबाजी के बीच कांग्रेस के एक शीर्ष प्रतिनिधिमंडल ने जिला कलेक्टर से मुलाकात की और उन्हें महामहिम राष्ट्रपति तथा राज्यपाल के नाम संबोधित एक मांग पत्र (ज्ञापन) सौंपा।

सरकार को घेरते हुए कांग्रेस जिलाध्यक्ष लक्ष्मणसिंह गोदारा ने तीखे लहजे में कहा : 'केंद्र और राज्य की भाजपा सरकारें आज हर मोर्चे पर पूरी तरह विफल साबित हुई हैं।

'साइलेंट किलर' का खौफनाक इंतकाम : उसी खाट पर दोबारा पहुंचा जहरीला सांप, दंपति को निगलने के बाद ग्रामीणों ने लाठियों से पीटा; मासूम ने मौत को दी मात

सेड़वा के फागलिया गांव के इस वाकय ने विज्ञान और अंधविश्वास के बीच की बहस को दोबारा गरमाया

लोक टुडे। बाड़मेर

सामने आया है जिसने विज्ञान और अंधविश्वास के बीच की बहस को दोबारा गरमा दिया है। एक ही परिवार के तीन लोगों को डंसकर दंपति की जान लेने वाला जहरीला सांप (क्रेत) अगली ही रात ठीक उसी समय, उसी कमरे में और उसी खाट पर दोबारा पहुंच गया। मानो वह अपने पीछे छूटे काम को पूरा करने आया हो। हालांकि, इस बार ग्रामीणों की सतर्कता से बड़ी अनहोनी टल गई और लोगों ने उस 'काल' को लाठियों से पीट-पीटकर मार डाला। इस बीच, इस खौफनाक दास्तान में राहत की इकलौती खबर यह है कि 5 साल का मासूम समय रहते जोधपुर एम्स पहुंच गया, जहाँ डॉक्टरों की मुस्तैदी से उसकी जान बच गई है।

सांप के दोबारा लौटने से गांव में फैली दहशत -

अमूमन माना जाता है कि सांप डंसने के बाद अपना रास्ता बदल लेते हैं, लेकिन इस घटना ने

सबको हैरत में डाल दिया। रविवार रात जब पूरा गांव दंपति की मौत के मातम में डूबा था, तभी वह जहरीला जीव रेंगता हुआ ठीक उसी खाट के नीचे पहुंच गया जहां श्रवणराम और लाछी देवी सोए थे। घर में मौजूद एक सदस्य की नजर जैसे ही उस पर पड़ी, चीख-पुकार मच गई। पल भर में लाठी-डंडों से लैस दर्जनों ग्रामीण वहां इकट्ठा हो गए और घेराबंदी करके उस सांप को मौके पर ही ढेर कर दिया। ग्रामीणों का कहना है कि अगर समय रहते उसे नहीं देखा जाता, तो वह घर के अन्य सदस्यों को भी अपना शिकार बना लेता।

वक्त रहते एम्स पहुंचना बना मासूम के लिए वरदान -

जहां एक तरफ माता-पिता ने स्थानीय अस्पतालों के चक्कर काटने और समय पर सही इलाज न मिलने के कारण दम तोड़ दिया, वहीं उनके 5 वर्षीय मासूम बेटे विकास के लिए सही समय पर लिया गया फैसला जीवनदान साबित हुआ। हालत बिगड़ते ही परिजनों ने बिना वक्त गंवाए उसे जोधपुर एम्स पहुंचाया। एम्स के पीडियाट्रिक आईसीयू में डॉक्टरों की विशेष टीम ने तुरंत एंटी-वेनम की भारी खुराक देकर जहर के असर को बेअसर करना शुरू किया। डॉक्टरों के मुताबिक, बच्चा अब खतरे से बाहर है और उसे वेंटिलेटर से हटा लिया गया है।

मासूम को नहीं पता, अब इस दुनिया में कोई नहीं उसका

जोधपुर एम्स के बेड पर लेटा 5 साल का विकास अब खतरे से बाहर है। डॉक्टरों की त्वरित कार्रवाई और समय पर मिले एंटी-वेनम इंजेक्शन ने उसके शरीर में फैल रहे जहर को तो रोक दिया, लेकिन नियति के इस गहरे जख्म को भर पाना नामुमकिन है। अस्पताल के कॉरिडोर में खड़े रिश्तेदार रोते हुए बस यही कह रहे हैं कि 'विकास तो समय पर अस्पताल पहुंच गया, काश उसके माता-पिता को भी ऐसा ही त्वरित इलाज मिल जाता।'

उसी बिस्तर पर काल बनकर मंडरा रहा था सांप -

इस त्रासदी के बीच रविवार रात को एक बेहद डरावना दृश्य देखने को मिला। जिस बिस्तर पर सोकर इस परिवार की खुशियां उजड़ गईं, वह जहरीला जीव अगली रात फिर उसी जगह कुंडली मारकर बैठा मिला।
ग्रामीणों ने एकजुट होकर उस सांप को तो मार गिराया और अपना गुस्सा शांत कर लिया, लेकिन वह सांप उस मासूम की जिंदगी में जो कभी न भरने वाला सन्नाटा छोड़ गया है, उसकी भरपाई कोई नहीं कर सकता। गांव की गलियों में आज सिर्फ मातम है और हर आंख नम है।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक संपादक: नीरज मेहरा द्वारा बोनस ग्राफिक्स, लक्ष्मी नगर, झोटवाड़ा मार्ग, अजमेर रोड़, जयपुर-302006 से मुद्रित एवं 141, दयानन्द नगर, फेज प्रथम झालाना डूंगरी गली नंबर 19, थाना गांधी नगर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रबंध संपादक- पी.के.बृजवाल, 9950325930, 9571635930 (कानूनी सलाहकार एडवोकेट कैलाशनाथ भट्ट)